जीवन एक रंग अनेक

जैव विविधता क्या है तथा उसकी दैनिक जीवन में उपयोगिता

आलेख– बी.के. त्यागी

एपिसोड–1

पात्र परिचय

1. पिता	42 वर्ष
2. मां	40 वर्ष
3. मेधा	15 साल की समझदार लड़की
4. प्रयास	14 साल का होशियार लड़का
5. गुलाब सिंह	50 साल का माली
6. अनुराग (नर्सरी का मालिक)	35 साल का एक युवक
7. डा. बरूआ	40 साल का एक वैज्ञानिक

दृश्य–1

(सुबह का दृश्य) (रेडियों में गाना–ये कौन चित्रकार है– फिल्म बूंद जो बन गई मोती)

मांः– अरे अब ऊठो, आज रविवार है तो क्या सोते ही रहोगें।

प्रयासः– बस उठता हूँ।

मांः– तुम्हारी बहन मेधा सुबह ऊठ कर पढ़ रही है और तुम्हारे पिता बगीचे की सफाई कर रहे हैं ....अच्छा ऊठो –ऊठो।

प्रयासः– (उठते हुए) क्या समय हुआ है।

चंदनः– सात बज रहे हैं।

मांः– मैं ये पूछने आई थी आज नाश्ते में क्या खाओगे तुम लोग।

प्रयासः– पकोड़े और वो भी पालक और आलू के।

मेधाः– और मुझे बैंगन और प्याज के।

मांः– हां हां पता है।

मांः– देखा कैसे पकोडे का नाम सुनकर भागकर आई है ..... (भागकर आती है) ..... तो ठीक है। प्याज और आलू तो घर में है। पालक, तुम बगीचे से तोड़ लो पर ..... बैंगन तो बाजार से लाने पड़ेगें।

मांः– ठीक है, मैं रसोई में पकोड़े की तैयारी करती हूं तुम दोनों मुंह हाथ धोकर जल्दी से बगीचे से पालक तोड़ लो।

दृश्य–2

प्रयासः– अरे पिताजी नमस्ते आप सुबह–सुबह बगीचे में क्या कर रहे हो।

पिताः– देखते नहीं, इन क्यारियों में कितनी घास–पूस और खतपतवार उग आई है इसे ही साफ कर रहा हूँ।

प्रयासः– मुझे उस क्यारी से कुछ पालक तोड़ना है। अरे ऽऽ इसमें भी कितनी घास–पूस है। ओऽऽ फोऽऽ... ये घास–पूस क्यों उगती हैं। ये कुछ काम की तो है नहीं बस क्यारी और खराब कर दी इसने।

पिताः– या हुआ अगर, ये घास–पूस अगर हमारे काम की नहीं तो..... कई जानवर का तो ये भोजन है। गांव में तो ऐसी इसे हम चारे के रूप में उपयोग करते है। इसी चारे को खाकर गाय भैस दूध देती है।

प्रयासः– आप कहना चाहते है ये घास–पूस नहीं बल्कि दूध है।

पिताः– हां बात तो तुमने मजाक में कही पर है बिल्कुल सही।

कमलः– वो कैसे।

मां का प्रवेश

मांः– तुम लोग एक–एक गिलास दूध पी लो अभी नाश्ता बनने में देर है।

पिताः– लो ले आई (हंसते हुए) घास, तुम्हारी मां।

मांः– क्यों भई, दूध और घास में तुम्हें कुछ फर्क दिखाई नहीं देता क्या?

पिताः– फर्क तो है ..... पर है भी नहीं।

मेधा/प्रयासः–वो कैसे।

पिताः– देखो, सभी जीवन किसी न किसी रूप में पेड़ पौधों पर ही निर्भर करते हैं केवल पेड़ पौधे ही अपना भोजन बना सकते हैं। कुछ जीव पेड़–पौधों को खाते है तो कुछ जैसे (नाटंकी होते हुए) जंगल का राजा शेर, उन जीवों को ही खाता है। यूँ कहो कि सभी जीव किसी न किसी रूप में उन्हीं पर निर्भर करते हैं। सोचो ..... गाय अगर घास –पूस न खाती तो दूध कैसी देती।

मेधा/प्रयासः–समझ गये।

प्रयासः– पर पिताजी, हमारे पास तो गाय भैंस नहीं है पर फिर इस घास–पूस और इस सारी खतपतवार का हमारे लिये क्या फायदा।

मेधाः– मैंने स्कूल में एक कहानी सुनी थी। एक आश्रम में गुरूजी ने सभी विद्यार्थियों केा कहां कि एक ऐसा पौधा लाओ जिसका कोई उपयोग न हो। सभी विद्यार्थी कुछ ही समय में कुछ पेड़–पौधे लेकर लौट आये। केवल एक को छोडकर।

प्रयासः– क्या उसे कहीं भी कोई घास–पूस नहीं मिली।

मेधाः– नहीं, क्योंकि जिस पौधे या पेड़ को वह बेकार समझता था उसे लोगों से पूछने पर उसका कोई न कोई उपयोग पता लग ही जाता। किसी पेड़ से उसे इमारती लकड़ी मिलती तो किसी से ईंधन, किसी से कपड़ों के लिये रेशे।

प्रयासः– तेरा कहने का मतलब है इस पृथ्वी पर जितने भी पेड़–पौधे हैं उन सबका कुछ न कुछ उपयोग है।

पिताः– बिल्कुल सही।

प्रयासः– अच्छा तो मान लिया ये अमरूद के पेड़ से हमें फल मिलते हैं पर इस घास–पूस का हम क्या करें। फिर हमारे लिये तो यह बेकार ही है।

पिताः– नहीं, इसे कुछ दिन ऐसे ही पड़े रहने दो यह खाद बन जाएगी और हमारी इन क्यारियों की मिट्टी को और उपजाऊ बनाऐगी।

मेधाः– खाली पड़ी जमीन पर ये घास–पूस ही तो हवा व पानी से मिट्टी के कटाव को रोकती है। और मिट्टी की नमी बनाए रखती है। और इस घास–पूस में ऐसे कई पौधे भी है जिसमें हमें कई महत्वपूर्ण औषधिया भी मिलती है।

मेधाः– अरे बाप रे तुझे ये सब किसने बताया।

मेधाः– स्कूल में हमारी टीचर ने।

मांः– अब उठो भी, यही बहस करते रहोगे, प्रयास तुम बाजार जाओ कुछ सब्जी और फल ले आओ।

मेधाः– अरे देखो में कैसे छोट–छोटे पौधे है इस क्यारी में जैसे दो ढालो के बीच में कोमल पत्ते है, लगता है मानो इनके पहरेदार हों।

प्रयासः– अरे हां, ये तो बहुत सुन्दर है। ये तो किसी दाल का बीज है।

पिताः– मुझे तो ये राजमे के पौधे लगते है।

मांः– नहीं, ये इमली के बीज है, और ये पौधा उसी का है।

पिताः– तुम्हे कैसे पता?

मांः– कुछ दिन पहले घर में सांभर बना था, उसे खट्टा करने के लिये उसमें इमली डाली थी। उसके बीज खिड़की से मैंने बगीचे में फेंक दिये थे।

पिताः– तुम्हारे सांभर में इस बार वो स्वाद नहीं था जो हमेशा होता है।

प्रयासः– हां मुझे भी उस दिन सांभर अच्छा नहीं लगा।

मांः– अच्छा कैसे लगता। उसमें सारे मसाले जो नहीं पड़े। जानते हो सांभर में 15 से ज्यादा मसाले पड़ते हैं तब वो स्वाद आता है।

मेधाः– ओ मां, 15 मसाले। यानि 15 किस्म के पेड़–पौधे की आवश्यकता केवल सांभर के स्वाद के लिये।

मांः– और हॉ ..... खास किस्म की प्याज, जो दक्षिण भारत से आती है। तुम लोग बाजार जा रहे हो न, वो कोने वाली दुकान पर जाना, वो छोटी–2 कुछ लम्बी–2 सी प्याज बस उसी दुकान पर ही मिलती है। कहना सांभर वाली प्याज चाहिए।

प्रयासः– मां प्याज तो प्याज होती है उससे क्या फर्क पड़ता है।

मांः– ठीक है कोई भी ले आना पर फिर मुझसे मत कहना की सांभर में खास स्वाद नहीं आया।

पिताः– लो भई हो गई आज हमारी बगिया की सफाई, अब मैं नहाने जाता हूं। अजी सुनती हो वो आज अपना माली गुलाब सिंह भी आयेगा।

मांः– आपने मेरी पंसद के पौधे मंगाए है न?

पिताः– हां भई आज तुम खुद ही उसे बताओं तुम्हें किस लिये कौन से पौधे चाहिए।

मांः– और प्रयास तुम लो ये थैला और जल्दी से बाजार जाओ। याद है न क्या–क्या लाना है।

कमलः– हां मां कुछ सब्जियां, टमाटर, आलू और पकोडे के लिये बैंगन।

दृश्य–3

(बाजार का दृश्य) सब्जी वालों की आवाजें, वाहन की आवाज, भीड़ की आवाज।

प्रयास(स्वयंसे):सबसे पहले बैंगन ले लेता हूँ। हां वो रहा उस सब्जी वाले के पास।

कमलः– भैय्या बैंगन कैसे दिये।

सब्जीवालाः– कौन से बैंगन, ये गोल बड़े, या छोटे वाले या लम्बे वाले।

प्रयासः– (हैरानी से) तीन–तीन तरह के बैंगन, मैंने तो घर पर पूछा ही नहीं कि कौन सा बैंगन लाना है।

सब्जीवालाः– तुम्हे बैंगन का भुरता बनाना है या सब्जी या भरवा बैंगन बनाने हैं।

प्रयासः– अरे बाप रे, ये तो आज ही पता लगा हर बैंगन की सब्जी अलग तरह से बनती है, मैं तो सोचता था बैंगन तो बैंगन है क्या गोल या छोटा और क्या लम्बा।

सब्जीवालाः– क्या सोच रहे हो मुन्ना, बैंगन नहीं चाहिए।

प्रयासः– बैंगन तो चाहिए पर सब्जी के लिए नहीं पकोड़े के लिए।

सब्जीवाला (हंसते हुए):– तो ये बड़े गोल बैंगन लो। पकोड़े तो इसी के स्वाद बनते है।

प्रयासः– लम्बे और इन छोटे बैंगनों के पकोड़े नहीं बनते क्या?

सब्जीवालाः– बन तो जाएगें पर खास स्वाद नहीं आएगा।

प्रयासः– तो क्या इन तीनों बैंगनों के स्वाद में कोई अन्तर है?

सब्जीवालाः– क्यों नहीं बाबू जी। जब तीनों की शक्ल सूरत अगल है तो तीनों के स्वाद भी अलग–अलग होंगें।

प्रयासः– तो भैया ये बताओं, बैंगन कितने तरह के होते हैं।

सब्जीवालाः– मुझे तो बस तीन तरह के बैंगन के बारे में पता है हां कभी–कभी मन्डी में सफेद बैंगन भी आते हैं।

प्रयासः– हे भगवान, ... बैंगन सफेद भी होता है .....अच्छा भईया, ये बताओं शक्ल सूरत के फर्क से क्या इनके दाम में भी फर्क पड़ता है?

सब्जीवालाः– हां भई, अब जल्दी करो, धन्धे का समय है।

प्रयासः– अच्छा इनका क्या भाव है।

सब्जीवालाः– ये गोल वाला 16 रूपये किलों, ये लम्बा वाला 12 तथा ये छोटा वाला 10 रूपये किलो।

प्रयासः– ये गोल वाले एक किलो दे दो।

(बैंगन लेते है)

प्रयासः– (बड़बड़ाते हुए) बैंगन एक पर तीन आकार और तीन अलग–अलग दाम ..... कमाल है। (बड़बड़ाते हुए) बैंगनों का आकार और स्वाद अलग–अलग क्यों होता है और इसकी जरूरत क्या है। बैंगन तो बैंगन है फिर एक आकार का क्यूं नहीं–अरे टमाटर भी तो लेने हैं, वो रहे उसके पास ..... अरे इसके पास भी टमाटर तो अलग–2 टोकरों में रखे है। एक छोटे और गोल है और दूसरे कुछ लम्बें।

प्रयासः– भैय्या टमाटर कैसे दिये।

सब्जीवालाः– ये देशी टमाटर 10 रूपये किलो और ये शिमला वाले 16 रूपये किलो।

कमलः– दोनों टमाटरों में क्या फर्क है।

सब्जीवालाः– (हंसते हुए) बाबू जी ये छोटा गोल देशी टमाटर ज्यादा खट्टा होता है सब्जियों में खटास के लिए इसे डाला जाता है और ये ज्यादा लाल और लम्बा, इसका गूदा ज्यादा मोटा होता है और ये कम खट्टा होता है इसे सलाद में अधिक खाया जाता है।

प्रयासः– (हैरान होकर) कमाल है। मैंने तो आज तक इस बात पर कभी गौर ही नहीं किया कि एक ही सब्जी कई स्वाद, आकार और रंग की हो सकती है। ..... ये तो सोचने की बात है पर ऐसा क्यूं होता है। .....चलो जल्दी से बाकी सामान खरीद कर घर चलता हूँ, पिताजी से पूछता हूँ।

दृश्य–4 (घर पहुंचते हुए)

मांः– बडी देर कर दी बैंगन ले आये। लाओ सब सामान तैयार है तुम दोनों जल्दी से नहा लो।

पिताः– और फिर करते हैं अपनी–अपनी पसंद के पकोड़ों का नाश्ता पुदीने की चटनी के साथ।

प्रयासः– पर मुझे धनिये की चटनी पसंद है पापा, पुदीने की नहीं।

पिताः– वाह भई मजा आ गया, आज खाते हैं अपनी–अपनी पसंद के पकोड़े अपने–अपने स्वाद की चटनी के साथ ..... मेधा बेटे तुम भी आ जाओ। होमवर्क बाद में कर लेना।

पिताः– (अखबार पढ़ते हुए) अरे आज की सबसे मजेदार खबर।

मेधा/प्रयासः–क्या है पिताजी?

पिताः– यही की जीवन की किताब पढ़ ली गई है। याने हमारे सारे जीन्स की पहचान कर ली गई है।

मेधा/प्रयासः–जीवन की किताब।

पिताः– और इससे इस बात को और बल मिला है कि हमारे पूर्वज बन्दर व चिम्पांजी ही थे। और आज जो हमारा रूप है उसकी शुरूआत 30000लाख साल पहले हुई थी। और हमारे 1,30,000 के लगभग जीन्स है यानि अनुवांशिक सामग्री है उनमें से कुछ जीन्स हमें जीवाणुओं और पेड़ पौधों से भी मिले है।

मेधाः– यानि हमें कुछ अनुवांशिक सामग्री एक कोशकीय जीवों से भी मिली है।

प्रयासः– यानि बन्दर और चिम्पाजी ही नहीं जीवाणु, अमीवा और पेड़ पौधे भी हमारे दूर–दूर–दूर के पूर्वज हुए।

पिताः– बिल्कुल सही समझा तुमने।

(दरवाजे पर माली का प्रवेश)

गुलाब सिंहः– बाबू जी क्या घर में हो (बाहर से आवाज)

माली का प्रवेश

पिताः– लो गुलाब सिंह आ गया।

मालीः– नमस्ते बीबी जी।

मांः– नमस्ते, हम तुम्हारा ही इन्तजार कर रहे थे ..... वो फूलों वाले पौधे पाए हो न।

मालीः– हां बीबी जी। तुम्हारे कहने अनुसार इस बार में कई तरह के फूल वाले पौधे लाया हूँ।

प्रयासः– मेरे लिए पीला गुलाब लाये हो।

मालीः– लाया हूँ, पर मेरा कहना मानो तो दो पौधे अपने देशी गुलाब के भी लगवा लो।

मेधा/प्रयासः–पर क्यों।

मालीः– ये पीला गुलाब विलायती है, इसे अच्छा खाद पानी चाहिए, यहां इसकी सेवा पानी में कमी हुई कि इस पर फूल आना बंद।

मेधाः– क्या देशी गुलाब को खाद पानी नहीं चाहिए।

मालीः– चाहिए पर कुछ हद तक ये इसकी कमी झेल जाते हैं और कुछ फूल तो देते ही रहते हैं।

मेधाः– हां तो भैय्या ये गुलाब तो बिल्कुल तुम्हारी तरह ही नखरा बाज हैं।

मांः– अच्छा तुम दोनों फिर शुरू हो गये– हां तो, गुलाब सिंह जी, पिछली बार तुम्हारे बाबू जी ने सारी क्यारी में गेंदे और गुदावरी लगवा दी थी।

मेधाः– नतीजा ये हुआ कि सर्दियों को छोड़कर पूरे साल हमारी मम्मी को सुबह पूजा के लिये ताजे फूल नहीं मिले।

प्रयासः– और मुझे ही, मम्मी के लिये बाजार से फूल लाने पड़े।

मांः– तुम दोनों मुझे भी कुछ बोलने दोगे– हां तो गुलाब सिंह जी इस बार क्यारियों में पौधे इस तरह के लगाओं कि पूरे साल भर हमारे बगीचे में कुछ न कुछ फूल खिलते रहे।

मालीः– तो ठीक है बीबी जी, ये चमेली, नाग चंपा, सफेद और लाल लिली और हां ये चाइना रोज और ये वोगन विलिया के पौधे लगा देता हूँ कुछ ही महीनों में आप की बगिया में पूरे साल फूल ही फूल दिखाई पडेंगे।

मेधाः– तब तो हमारा घर भी फूलों की घाटी हो जाएगा।

प्रयासः– हां उसने तो 200 से ज्यादा किस्म के फूल खिलते हैं।

मेधाः– सच अगर इतने रंग बिरंगे फूल न होते तो शायद ये धरती इतनी सुन्दर न लगती।

प्रयासः– तब तो उसकी हालत हमारी बगिया जैसी ही होती ..... रूखी–सूखी ।

मेधाः– तब कोई कवि या लेखक भला कोई सुन्दर रचना कैसे लिख पाता।

प्रयासः– तुम्हें याद है, मम्मी ने बताया था कि महाकवि कालीदास ने अपनी रचनाओं में पेड़–पौधौं और जीव जन्तुओं से सजी धरती का बहुत बहुत ही सुन्दर वर्णन किया है।

मेधाः– तो ठीक है जब हमारे बगीचे में खूब फूल लगे तो तू भी यहां बैठ कर नाटक लिखना।

पिताः– अरे भई कौन लिख रहा है नाटक ?

प्रयासः– देखो पिताजी यह मुझे चिढ़ा रही है।

पिताः– ओ हो तो आज न शैतानों ने गुलाब सिंह को घेर रखा है– गुलाब सिंह जी क्या तुम मेरे पौधे लाए हो?

मालीः– जी बाबू जी ये रही सतावर और ये रही तुलसीं।

मांः– अरे तुमने खूब याद दिलाया, तुलसी के बारे में तो भूल ही गई थी।

पिताः– पर मैं नहीं भूला।

मेधाः– अरे ये कैसी बेल है छोटे–छोटे तिनकों जैसे हरे पत्तों वाला।

पिताः– ये सतावर की बेल है।

मांः– ये वही है न जो पेट की गड़बड़ में काम आता है।

मालीः– बिल्कुल ठीक पहचाना बीबी जी। आजकल तो लोग इन सब देशी दवाओं के पौधों के बारे में भूलते ही जा रहे हैं।

पिताः– पर हम भूलने वालों में से नहीं है।

प्रयासः– क्योंकि हमारे घर आज भी सर्दी की खांसी को भगाने के लिए तुलसी के पत्तों की चाय पी जाती है।

मेधाः– और अगर इससे काम न बने तो पत्तों के अर्क को शहद में मिलाकर चटाया जाता है।

मांः– लगता है घर में में सभी वैध हो गये है। अब गुलाब सिंह को क्यारियों में पौधे लगाने दो।

पिताजीः– गुलाब सिंह आज कि दिहाड़ी में तुम्हे मुझे आधा हिस्सा देना होगा क्योंकि क्यारियों कि सारी घास मैंने साफ करी है।

मालीः– घास तो हटा दी पर बाबूजी ये लोहे के टुकडे, टूटे बल्व, प्लास्टिक की थैलियां, प्लास्टिक के ये टुकडे तो यूं ही फैले पड़े है।

पिताजीः– अरे हां, इन पर तो मैंने ध्यान ही नहीं दिया।

मालीः– घास पूस तो सड़कर खाद का काम करेगी, मिट्टी में मिलकर उसे उपजाऊ बनाएगी पर।

मेधा/प्रयासः–पर क्या।

मालीः– पर ये कांच, लोहा और सबसे खतरनाक ये प्लास्टिक ..... धरती इस पचाने में अपना पूरा जोर भी लगा दें तो भी काफी समय लगता है और इसका हाजमा खराब होता है सो अलग।

पिताजीः– गुलाब सिंह जी बात तो तुमने पते की कही– तब तो ये बड़ा सा पत्थर भी इस क्यारी से हटाना पड़ेगा।

मालीः– बाबू जी इसे उठा कर हम वहां कोने में रख देते हैं।

(माली पत्थर हटाता है)

प्रसासः– अरे बाप रे, मेधा देखो इसके पत्थर के नीचे कितने सारे कीड़े–मकोड़े है।

मेधाः– देखो पत्थर हटते ही ये इधर उधर भाग रहे हैं। अरे ये देखो कान खजूरा, ये रही गुवरैल। ओ मां ये रहे कितने सारे छोटे–छोटे कीट ..... इन्हें तो पहचानना भी मुश्किल है।

प्रयासः– मैं कीड़े मारने वाली दवाई लाता हूं, अभी सब के सब यही मर जाऐंगे।

मालीः– नहीं मुन्ने ऐसी भूल मत करना, ये भी जीव हैं, ये भी उसी धरती मां की सन्तान है जिसकी हम हैं।

मेधाः– अरे माली अंकल भी वही बात कर रहे हैं जो खबर हमने अखबार में पढ़ी।

प्रयासः– माली चाचा आप कहना चाहते हो कि ये भी हमारे रिश्तेदार या बहन भाई हैं।

मालीः– हां, क्योंकि इस धरती पर सिर्फ हम ही अकेले जीव नहीं हैं, जितना अधिकार हमें इस धरती पर रहने का है उतना ही और सारे जीवों का भी है।

मेधाः– क्या इन जीवों में पेड़ पौधे भी शामिल हैं।

मालीः– हां, पेड़–पौधे ही नहीं, जीव–जन्तु ये नन्हे–2 कीट्, और इनसे भी नन्हे– नन्हे जीव जो हमें नंगी आंखों से दिखाई भी नहीं देते।

प्रयासः– पर इस सबका क्या फायदा है– ये कितने गन्दे लगते हैं और कुछ तो बीमारी भी फैलाते हैं।

मालीः– मुन्ना हम ज्यादा तो नहीं जानते पर हम इतना जानते हैं कि जहां जितने कीड़े मकोडे और ये छोटे जीव होंगे– समझो वहां की मिट्टी उतनी ही मिट्टी उपजाऊ है।

पिताः– मिट्टी जितनी उपजाऊ होगी तो वहां उतना ही भिन्न–भिन्न प्रकार का जीवन होगा। और जीवन की यह विविधता जितनी अधिक होगी वहां का वातावरण भी उतना ही अच्छा होगा। यानि वहॉ की मिट्टी, पानी, हवा सब ठीक ठाक होगा ..... क्यों गुलाब सिंह।

मालीः– उतना तो वह नहीं जानते, पर ये हमने देखा है कि रेगिस्तान की मिट्टी में वही मुश्किल से ढूढ़ने पर ही कोई छोटा–मोटा जीव नजर आता है। और उस मिट्टी में पेड़–पौधे भी बहुत कम होते हैं।

पिताः– गुलाब सिंह तुम तो बहुत ज्ञानी हो।

गुलाब सिंहः–ज्ञानी क्या खाक बाबूजी, हम हाथ जलाये बैठे हैं। गांव में हमारी अच्छी खासी खेती थी। ज्यादा पैदावार के चक्कर में नये बीज, नई खाद नये कीट नाशक डाल–डाल के अपनी जमीन को नाश कर दिया। बहुत अत्याचार किया हमने धरती मां पर अपने फायदे के लिये। हमने धरती मां के उन बच्चों को मार डाला जिन्हें वो अपनी गोद में छुपाये थी। हम समझ नहीं पाये कि ये हमारी कितनी सहायता करते थे। फलती फूलती धरती मां को बंजर कर दिया हमने और अब घूम रहे हैं घर–घर पौधे बेचने ..... हम समझ नहीं पाये कि ये हमारी कितनी सहायता करते थे।

मेधाः– सहायता, कैसी सहायता?

मालीः– हमें ये सब बाद में पता चला कि 1 ग्राम मिट्टी में 1 करोड से ज्यादा जीवाणु, एक लाख से ज्यादा खमीर कोशिका तथा 50 हजार कवक तन्तु इतने ही शैवाल और क्या कहते हैं उसे– हां अमीवा जैसे जीव–जन्तु पाये जाते हैं। ये सब हमारी तरह धरती मां के बच्चे ही तो है।

प्रयासः– ये तुमने कैसे जाना।

मालीः– हमने अपनी मिट्टी की जांच करवाई थी तब पता चला उसमें ये सब छोटे और नन्हे जीव कीटनाशकों और रसायनिक खाद की वजह से समाप्त हो चुके थे।

मेधाः– माली अंकल आपने कहां कि छोटे जीव जन्तुओं की मात्रा से मिट्टी कितनी उपजाऊ है इस बात का पता चलता है। पर ये मिट्टी को उपजाऊ कैसे बनाते हैं।

मालीः— ये छोटे—2 जीव जो भी प्राकृतिक कूड़ा करकट होता है उसे सड़ाने गलाने में मदद करते हैं तथा पेड़ पौधों की अच्छी बढ़त के लिये आवश्यक खनीजों जैसे गंधक, लोहा, आदि को ऐसे रूप में बदल देते हैं जिनका पौधे उपयोग कर सके। और दाल वाले पौधों की जड़ों में अड्डा जमाये जीवाणु तो वायुमण्डल की नाइट्रोजन को ही इस रूप में ले आते हैं कि किसान को अपने खेत में यूरिया जैसी खाद डालने की जरूरत ही नहीं पड़ती।

प्रयासः— यानि प्रकृति ने हर जीव को न केवल संभाल रखा है बल्कि उसे कुछ न कुछ काम भी दे रखा है।

पिताः— अच्छा बच्चों अब बहुत समय हो गया अब तुम भी अपने काम पर लग जाओ।

मेधाः— बस एक बात और गुलाब अंकल से पूछनी है।

मालीः— हां हां पूछो बेटा।

मेधाः— अंकल क्या आप बता सकते हैं कि इस पूरी धरती पर कितने प्रकार के जीव जन्तु हैं। मेरा मतलब कितने प्रकार का जीवन है।

मालीः— बिटिया ये तो हम नहीं जानते। पर है बहुत सारे हां, अगर तुम्हें सही—सही जानकारी चाहिए तो हमारी नर्सरी के मालिक अनुराग जी से पूछना।

मेधा/प्रयासः—अनुराग जी से, जिन्हें लोग फूल—पत्तियों का डाक्टर कहते हैं।

मालीः— (हंसते हुए) हां हां वही, वे केवल फूल पत्तियों के बारे में ही नहीं बल्कि वे कीड़े मकोडे, सांप छिपकलियों, मेंढ़कों के बारे में भी जानते हैं। इन सबके ऊपर बड़ी सारी किताबे हैं उनके पास। हमेशा उन्हीं में खोये रहते हैं।

मेधाः— हम उनसे कब मिल सकते हैं।

मालीः— कब क्या आज ही शाम को चार बजे।

प्रयासः— पर कहां।

मालीः— हमारी नर्सरी में, आज वहां उनके एक दोस्त भी आ रहे हैं। वे सब मिलकर पेड़—पौधों और जानवरों की देशी नस्लों को बचाने के लिए कुछ काम कर रहे हैं।

मेधाः— मैं तो अनुराग अंकल से पूछॅगी एक सवाल?

प्रयासः— क्या?

मेधाः— यूही कि धरती पर जीवन कितने प्रकार का है। और तू क्या पूछेगा।

प्रयासः— यही कि बैंगन तो बैंगन है फिर शक्ल सूरत, स्वाद और दाम में अन्तर क्यूं?

मेधाः— लगता है तुझे और पकोडे चाहिए। ..... अच्छा और पूछेगा तू?

प्रयासः— यही कि सांवर वाली प्याज दक्षिण भारत के तमिलनाडु में ही क्यूं पैदा होती है। उत्तर प्रदेश में क्यों नहीं?

मेधाः– फिर खाने की बात–तू तो पेटू हो गया है। अच्छा तो ठीक चार बजे चलते है, अनुराग जी के पास।

मांः– तब तक तुम अपना होमवर्क पूरा कर लो और मैं तैयार करती हूँ दोपहर का खाना।

दृश्य –5

(मेधा– प्रयास रिक्शे में बैठकर नर्सरी पहुंचते हैं।)

प्रयासः– अरे रिक्शे वाले भैय्या रोको, ये रही अनुराग नर्सरी।

मेधाः– हां, ये रहा बोर्ड अनुराग नर्सरी का।

प्रयासः– ये तो बहुत बड़ी नर्सरी लगती है।

मेधाः– तभी तो, शहर के बाहर है।

प्रयासः– ये लो रिक्शे वाले भैय्या पैसे।

(दरवाजा खोलकर अन्दर जाते हैं)

मेधाः– कमाल है, यहां तो तरह–तरह के पौधों का खजाना है।

प्रयासः– देखो कैसे अलग–अलग क्यारियों में अलग–अलग तरह के पौधे हैं।

मेधाः– क्या तू नर्सरी को भी अपनी किताबों की आलमारी की तरह बनाना चाहता है कि एक किताब ढूढ़ने के लिये सब किताबों को बाहर निकालो।

प्रयासः– अरे यहां तो कई प्रकार के पक्षी भी है वो रहा तोता वो कबूतर (तभी कोयल की आवाज आती है)

मेधाः– यहां तो कोयल भी है–अरे ये देख ये कैसी छोटी सी चिडिया है।

प्रयासः– हां इसकी पूंछ देख कैसे उठक–बैठक कर रही है।

मेधाः– ये तितली तो देख। ये सफेद, ये काली, ये लाल।

प्रयासः– और वो पीली–वाह। कितना सुन्दर माहौल है लगता है बस यही बैठ जाऊ आंखे बंद कर के।

मेधाः– अभी आंखे खोल लो नहीं तो सामने पडे पत्थर से टकरा जाओगे।

(गुलाब सिंह का प्रवेश)

गुलाब सिंहः– आ गये बच्चों, अनुराग जी आपका ही इन्तजार कर रहे हैं। उनके दोस्त भी आये हुए है– वो कहां बैठे है, नीम के पेड के नीचे।

मेधा/प्रयासः–नमस्ते अनुराग अंकल।

अनुरागः– नमस्ते बच्चों, कहो कैसे हो।

दोनोंः– हम अच्छे हैं अंकल।

मेधाः— गुलाब अंकल ने बताया था कि आप और आपके दोस्त देशी प्रजातियों को बचाने के लिए बीज इकट्ठे कर रहे हैं।

अनुरागः— अरे हां मैं तो भूल ही गया, ये मेरे मित्र हैं, डा. अश्वनी बरूआ जो असम से आये है। ये असम से चावल की कई किस्मों के नमूने लाएं हैं।

डा. बरूआ :—इस बार मुझे केवल 15 नमूने ही मिले। और मध्यप्रदेश से मेसराम जी ने भी ये 7 नमूने भेजें है।

अनुरागः— अब हमारे पास चावल की लगभग 2000 किस्मों के नमूने इकट्ठे हो गये हैं।

मेधाः— चावल के 2000 किस्में — लो भैय्या तुम तो बैंगन की चार किस्मों को लेकर परेशान थे यहां चावल की 2000 किस्में हैं .....

प्रयासः— क्या चावल की 2000 किस्में होती हैं?

अनुरागः— दो हजार नहीं, हमारे देश में चावल की 30 हजार से 50 हजार तक किस्में पाई जाती थी और 30 साल पहले तक तो 20 हजार किस्मों की खेती भी होती थी परन्तु आज ये संख्या 20 से 30 किस्मों तक ही सीमित रह गई है।

प्रयासः— अंकल आप बीजों को क्यों इकट्ठे कर रहे हो।

अनुरागः— ये हमारी जैव सम्पदा है। हर एक किस्म की एक खास विशेषता है और हर किस्म अमूल्य है। अच्छा ये बताओं भारत में सबसे ज्यादा अनाज कौन सा खाया जाता है।

प्रयासः— (जल्दी से) गेहूं, सुबह शाम हम रोटी ही तो खाते हैं।

मेधाः— नहीं, चावल।

अनुरागः— बिल्कुल सही, भारत के अधिकतर लोगों का भोजन चावल है और हर जगह की जलवायु अलग—अलग है। तो हर जगह चावल की एक किस्म की खेती नहीं हो सकती।

मेधाः— जैसे देहरादून की बासमती बंगाल में पैदा नहीं हो सकती।

अनुरागः— बिल्कुल सही।

प्रयासः— ये तो सही है परन्तु फिर भी इतनी किस्मों का क्या फायदा।

अनुरागः— डा. बरूआ आप तो चावलों के विशेषज्ञ है आप ही इन बच्चों को कुछ बताओ।

डा. बरूआः— तो सुनो बच्चों, हर किस्म की कुछ खास विशेषता होती है। कुछ को तापमान कम चाहिए तो किसी को ज्यादा। कुछ को ज्यादा पानी चाहिए तो कुछ को कम, कुछ नम मिट्टी में भी पैदा हो सकती है। तो कुछ नमकीन मिट्टी में भी।

मेधाः— अब समझी। भारत जैसे देश में जहां अलग—अलग तरह की जलवायु है और अलग—अलग तरह की मिट्टी है वहां चावल की एक ही किस्म पैदा हो ही नहीं सकती है।

अनुरागः— और अगर ऐसा होता भी तो तुम्हे खिचड़ी और पुलाव एक ही चावल खाना पड़ता। (सभी हंसते हैं)

मेधाः— तब तो शायद हमें खिचड़ी और पुलाव का अन्तर ही पता नहीं होता।

प्रयासः— ऐसी बुरी—बुरी बाते मत सोचो। अभी तो हमारे पास 50 हजार किस्में हैं।

डा. बरूआः— यह अलग—अलग किस्मों का ही कमाल है कि भारत के सभी हिस्सों में चावल पैदा होता है। आज हमारे देश में सबसे ज्यादा पैदावार चावल की ही है।

अनुरागः— किस्में ज्यादा होने का एक लाभ और भी है।

दोनोंः— वो क्या?

अनुरागः— मान लो, अगर हमारे पूरे देश में चावल की एक ही किस्म लगाई जाए और उसे बीमारी लग जाए तो क्या होगा।

प्रयासः— तब तो पूरे देश में भूखमरी फैल जाएगी।

अनुरागः— बिल्कुल सही— परन्तु अगर किस्म अलग—अलग हो तो उस बीमारी में भी कुछ किस्में बची रहेगी।

मेधाः— इसका मतलब किस्में जितनी ज्यादा होंगी भूखमरी से उतना ही बचाव होगा। इसीलिये इन किस्मों को बचाना जरूरी है ..... क्यो अंकल।

डा. बरूआः— ये बच्चे तो सचमुच बहुत होशियार हैं।

अनुरागः— अरे हां हम तो बातों—बातों में भूल ही गये। गुलाब सिंह कह रहा था कि तुम मुझसे कुछ पूछने आये थे।

मेधाः— हां अंकल, आज सुबह से कुछ सवाल हम दोनों के दिमाग में घूम रहे हैं।

प्रयासः— पहले मुझे पूछने दो।

मेधाः— नहीं पहले मैं, चावल वाली बात से तेरे बैंगन वाले सवाल का आधा उत्तर तो मिल ही गया है इसलिये पहले मुझे सवाल पूछने दे।

अनुरागः— अच्छा तुम ही पूछो।

मेधाः— अनुराग अंकल ये बताओं कि इस धरती पर जीवन कितने प्रकार का है। मेरा मतलब इस पृथ्वी पर जो भिन्न—भिन्न जीवन है उनकी संख्या कितनी है।

डा. बरूआः— अनुराग जी मुझे लगता है ये बच्चे बायोडावर्सिटी यानि जैव विविधता के बारे में जानना चाहते हैं।

मेधा/प्रयासः—ष्जैव विविधताष यह क्या है (तभी प्रयास को छीक आती है)

प्रयासः— हां अंकल ष्जैव विविधताष क्या है?

अनुरागः— (हंसते हुए) अरे इतना परेशान होने की बात नहीं है ष्जैव विविधताष का मतलब तो इस शब्द में ही छुपा है।

मेधाः— जैव माने जीवित जिसमें जीवन हो या जान हो ओर विविधता यानि भिन्नता।

अनुरागः— बिल्कुल सही अर्थ निकाला तुमने— जैव—विविधता यानि इस पृथ्वी पर पाये जाने वाले विभिन्न जीवन।

मेधाः— सभी छोटे—बडे पेड़—पौधे और चीटीं से लेकर हाथी तक सभी जीव।

डा. बरूआः— और छीक के साथ अभी जितने जीवाणु और वाइरस जो प्रयास ने हवा में छोडे हैं ये सब भी इसमें शमिल है— (सभी हंसते हैं)

मेधाः— अंकल इस जीवन के विभिन्न प्रकार की संख्या कितनी होगी।

डा. बरूआः— वैसे तो यह कहना बहुत मुश्किल है परन्तु एक अनुमान के अनुसार यह संख्या 50 से 55 लाख तक होनी चाहिए।

प्रयासः— क्या अभी सभी जीवों को पहचाना नहीं गया है।

डा. बरूआः— हमारे वैज्ञानिक अभी केवल 17 लाख अलग—अलग प्रजातियों को ही पहचान पाये हैं। और ये खोज निरन्तर जारी है। हर साल कुछ नई प्रजातियां खोजी जाती है। जिसमें अधिकतर कीट् वर्ग की ही है।

दोनोंः— ऐसा क्यों?

डा. बरूआः— क्योंकि जीवन के लिये जो आवश्यक कारक है जैसे सही तापमान, हवा, पानी वे पृथ्वी पर सब जगह नहीं है। इसीलिये आधे से अधिक प्रजातियां पूरी धरती के केवल 7 वें हिस्से में ही पाई जाती हैं।

अनुरागः— डा. बरूआ, मैंने कही पढ़ था कि पृथ्वी के कटिबंधीय क्षेत्रों में ही 50 लाख से अधिक प्रजातियों का अड्डा है।

डा. बरूआः— बिल्कुल ठीक पढ़ा है आपने.....

प्रयासः— डा. बरूआ जैसे बैंगन एक जाति हुई परन्तु उसकी 3 या 4 किस्में है।

मेधाः— चावल की 50 हजार किस्में होती हैं।

प्रयासः— अरे अब मेरी बारी है, सवाल मुझे पूछने दे। हां तो चावल एक जाति है परन्तु उसकी 50 हजार किस्में हैं। हर किस्म अलग है और दूसरे भिन्न हैं ऐसी भिन्नता को हम क्या कहेगें।

डा. बरूआः— ऐसी भिन्नता को हम एक प्रजाती के अन्दर पाई जाने वाली जीन स्तर की विविधता या भिन्नता कहेगें।

मेधाः— तो क्या यह विविधा कई स्तरों पर पाई जाती हैं।

डा. बरूआः— हां, हां ष्जीनष स्तर के अलावा यह विभिन्नता जातिय व आवास स्तर पर भी पाई जाती है।

प्रयासः— अंकल मुझे कुछ सोचने दो .....बैंगन एक रूप तीन ..... चावल एक किस्म 50 हजार ..... अंकल अब में आप से कुछ पूछता हूं—जबाब हां या न में देना।

डा. बरूआ/अनुरागः– ठीक है।

प्रयासः– बैंगन और चावल–तो अलग जीवन यानि दो जातियां।

मेधाः– जैसे हम और चिम्पाजी।

डा. बरूआः– बिल्कुल ठीक, मेरा मतलब हॉ।

प्रयास/मेधाः–तो ये हुई जातिय स्तर की विविधता, और अब तक 17 लाख जातियों को पहचाना जा चुका है।

डा. बरूआः– हॉ।

प्रयासः– चावल एक और किस्म 50 हजार। यानि ये हुई एक ही जाति के अन्दर विविधता।

मेधाः– यानि ष्जीनष स्तर की विविधता।

प्रयासः– पर अंकल एक ही जाति में हर जीव भी तो अलग होता है।

अनुरागः– वो कैसे?

प्रयासः– जैसे हम सभी मनुष्य है परन्तु हम सबकी अंगुलियों के निशान अलग–अलग है यहां तक की मेरे और मेरे पिता और मेरी बहन मेधा के भी। मैंने तो पढ़ा था कि दो मनुष्यों के अंगुलियों के निशान एक जैसे हो ही नहीं सकते।

डा. बरूआः– ठीक सुना तुमने, यह एक प्रजाती के समुदाय के भीतर की विविधता है। जो केवल उन्हीं जीवों में पाई जाती हैं जो लैंगिंक रूप से प्रजनन करते हैं।

मेधाः– इस प्रकार तो हर ष्जीवष चाहे किसी भी जाति का हो विविधता के हिसाब से महत्वपूर्ण है। विशेष है खास है।

डा. बरूआः– बिल्कुल ठीक समझा आपने। क्योंकि ऐसा हर जीव कुछ विशेष जीन लिये हुए है और ये जीन आवादियां भी हमारी बहुत महत्वपूर्ण ष्जैव संम्पदाष हैं।

प्रयासः– आप अंकल ष्आवास स्तरष की विविधता के बारे में कुछ बात कर रहे थे।

डा. बरूआः– यह तीसरे स्तर की विविधता है जो जीवों में देखने को मिलती है।

दोनोंः– यह कैसी विविधता है?

डा. बरूआः– अगर हम केवल अपने देश की ही बात करे तो जहां हिमालय की ठन्डी जलवायु है तो दक्षिण की कटिबंधीय गर्म जलवायु भी है। एक ओर राजस्थान का मरूस्थल है तो दूसरी ओर बंगाल और आसाम की नम भूमी है। जलवायु की इसी विविधता के कारण यहां हर जगह विशेष प्रकार के ईको परितन्त्रों यानि म्बव.लेजमउ का विकास हुआ है।

मेधाः– जैव विविधता का इको परितन्त्रों से क्या सम्बन्ध?

अनुरागः– अरे भई, जलवायु की विविधता के कारण जीव–जन्तुओं पर अधिक प्राकृतिक दबाव पड़ता है। जीवन थोड़ा कठिन हो जाता है।

डा. बरूआः— हां, यहां उनका जीवन काफी चुनौतीपूर्ण होता है। अपने आपको जीवित रखने के लिये ये जीव अपने अन्दर तरह—तरह की आत्मरक्षक विधियां विकसित कर लेते हैं।

मेधाः— जैसे ही मरूस्थल का कांटेदार नागफनी।

डा. बरूआः— ठीक पकड़ा मेधा तुमने, ये आत्मरक्षा की प्रणालिया अनुकूलन के अलावा मुख्यतः रसायनों के परिणामस्वरूप भी होती है।

प्रयासः— तब तो दक्षिण भारत की सांभर वाली प्याज के विशेष स्वाद का कारण भी कोई रसायन ही रहा होगा।

अनुरागः— अरे भई ये सांभर बीच में कहां से आ गया। लगता है तुम्हें भूख लगी है। अरे गुलाब सिंह कुछ खाने को लाना।

डा. बरूआः— और मेरे लिए कुछ पीने को।

गुलाब सिंहः— अभी लाया बाबू जी।

मेधाः— तो मिल गया तुझे तेरे दूसरे सवाल का जबाब।

प्रयासः— हाँ, समझ में आ गया। तो अंकल बात कर रहे थे इको—परितन्त्र की विविधता की।

डा. बरूआः— हां जैसे हिमालय क्षेत्र की हम बात करे तो वहां ऊंची —ऊंची पर्वतमालाएं हैं ये एक विशेष प्रकार के इको—परितन्त्र की द्योतक है।

अनुरागः— डा. बरूआ शायद तभी यहां कुछ ऐसे पेड़—पौधे मिलते हैं जो अन्य और कहीं नहीं पाये जाते।

डा. बरूआः— हां, एक अनुमान के अनुसार भारत मे जो 5000 किस्म के दो बीज वाले पेड़—पौधे पाये जाते हैं उनमें से 30ः ऐसे हैं जो केवल हिमालय क्षेत्र में ही पाये जाते हैं इनको एण्डेमिक प्रजातियां कहते हैं।

दोनोंः— क्या कहते हैं।

डा. बरूआः— एण्डेमिक, यानि ऐसी प्रजातियां जो उस क्षेत्र से बाहर कहीं और नहीं मिलती।

अनुरागः— ऐसी विविधता को ही इको—परितन्त्र की विविधता कहा जाता है।

डा. बरूआः— एक बात और जिसे सुनकर तुम्हे अपने ऊपर नाज होगा।

दोनोंः— (उत्सुकता से) कौन सी बात?

डा. बरूआः— यही, यदि आस्ट्रेलियां को छोड दे तो भारत ही ऐसा देश है जहां सबसे ज्यादा एण्डेमिक वनस्पति प्रजातियां मिलती है।

गुलाब सिंहः— लो बाबू जी, ये रहे फल ..... अपनी नर्सरी के और लस्सी।

डा. बरूआः— लस्सी ..... वाह मजा आ गया।

प्रयासः— मुझे भी।

अनुरागः— पर जरा संभल के।

मेधाः– पर क्यों?

अनुरागः– इस लस्सी के गिलास में भी कई प्रकार की जैव विविधता है।

मेधा प्रयासः–अरे इसमें भी जैव विविधता है।

डा. बरूआः– लस्सी में कई तरह के वैक्टिरियां और श्यीस्टश यानि फफूंद है।

मेधाः– यहां भी जैव विविधता ने हमारा पीछा नहीं छोड़ा।

डा. बरूआः– पीछा कैसे छूटेगा, इस विविधता से ही तो हमें खाने, पीने, पहनने, मकान बनाने के लिये लकड़ी और बीमार पड़ने पर दवाईयां मिलती हैं।

प्रसासः– अंकल आप एक बात भूल गये, अगर मुझे कोई कविता लिखनी है तो उसक लिये जो सुन्दर माहौल चाहिए। वो भी इसी जैव विविधता की देन हैं

मेधाः– अरे तुम फिर कविता लिखने लगे चलो अब घर वापस चलें।

अनुरागः– हां बच्चों, अब देर हो रही है। तुम घर जाओ, मुझे उम्मीद है तुम्हें तुम्हारे सवालों का जवाब मिल गया होगा।

मेधाः– मुझे तो मिल गया।

प्रयासः– और मुझे भी ।

मेधाः– तो बता तूने क्या समझा।

प्रयासः– गा के सुनाओ।

सभीः– हां हां गा के सुनाऊ।

प्रयासः– तो सुनो।

इमली का बूटा बेरी का पेड़ –2

आ गई बात समझ में मुझको।

इमली क्यों होती है खट्टी?

मीठे क्यों होते हैं बेर?

घर चल बहना अब हो रही है देर।

(सभी हॅसते है।)

समाप्त